पश्चिमी घाट में नया पठार

हाल ही में महाराष्ट्र के पश्चिमी घाट में एक **दुर्लभ कम ऊँचाई वाले बेसाल्ट पठार** की खोज की गई है। यह खोज जलवायु परिवर्तन का **प्रजातियों के अस्तित्व पर होने वाले प्रभाव को समझने** और विश्व भर में चट्टानी उभारों एवं उनके विशाल जैवविविधता के महत्त्व को संरक्षित करने की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकती है।

प्रमुख बिंदु

- **निम्न ऊँचाई वाला बेसाल्ट पठार:** यह इस क्षेत्र में पहचाना जाने वाला चौथे प्रकार का पठार है;**पिछले तीन उच्च तथा निम्न ऊँचाई वाले लेटराइट एवं उच्च ऊँचाई वाला बेसाल्ट पठार हैं।**
- **विविध जैवविविधता:** पठार के सर्वेक्षण के दौरान 24 विभिन्न वर्गों के पौधों और झाड़ियों की 76 प्रजातियों के संबंध में जानकारी मिली।**यह एक महत्त्वपूर्ण खोज है** क्योंकि यह अन्य तीन चट्टानी उभारों के साथ मिलकर उनके साथ एक सामान्य पारिस्थितिकी तंत्र साझा करता है।
- यह अलग-अलग **पर्यावरणीय परिस्थितियों में प्रजातियों की अंतःक्रिया का अध्ययन** करने के लिये एक अद्वितीय मॉडल प्रणाली प्रदान करता है।

नोट: रॉक (चट्टान) आउटक्रॉप में मौसमी जल की उपलब्धता, सीमित मिट्टी और पोषक तत्त्व होते हैं, जो उन्हें प्रजातियों के अस्तित्व पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अध्ययन करने के लिये आदर्श प्रयोगशाला बनाते हैं। पठार इस प्रकार अंतर्दृष्टि का एक मूल्यवान स्रोत है कि प्रजातियाँ चरम स्थितियों में कैसे जीवित रह सकती हैं।

पश्चिमी घाट:

//

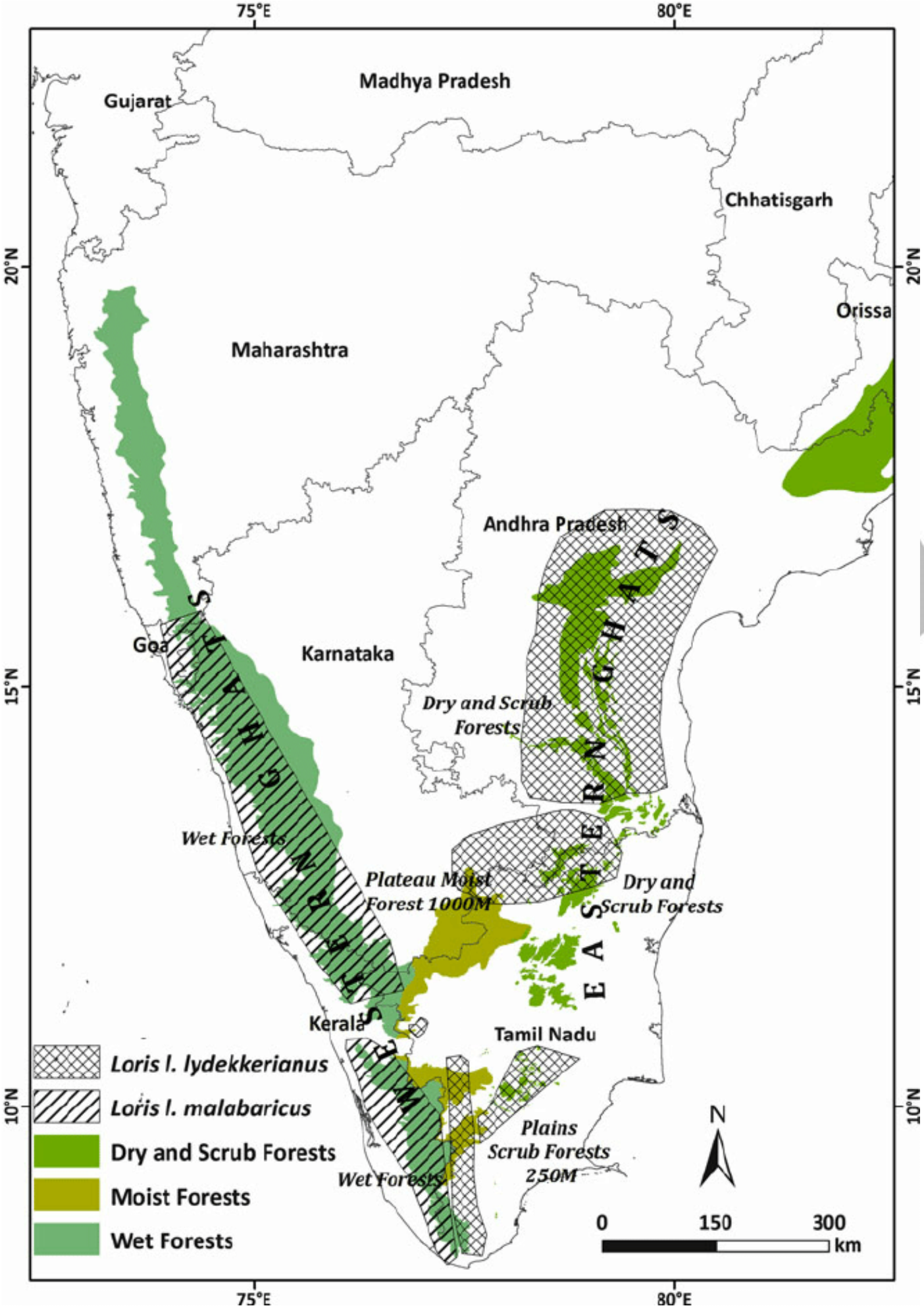
75°E
80°E
20°N
15°N
10°N
Madhya Pradesh
Gujarat
Chhatisgarh
Orissa
Maharashtra
Andhra Pradesh
Goa
Karnataka
Kerala
Tamil Nadu
SAHYADRI HILLS
EASTERN GHATS
Dry and Scrub Forests
Wet Forests
Plateau Moist Forest 1000M
Dry and Scrub Forests
Plains Scrub Forests 250M
Wet Forests
Loris l. lydekkerianus
Loris l. malabaricus
Dry and Scrub Forests
Moist Forests
Wet Forests
N
0
150
300
km

- **परिचय:**
  - पश्चिमी घाट भारत के पश्चिमी तट के समानांतर और केरल, महाराष्ट्र, गोवा, गुजरात, तमिलनाडु तथा कर्नाटक राज्यों के पहाड़ों की शृंखला से मिलकर बना है।
  - पश्चिमी घाट भारत के चार **वैश्विक जैवविविधता हॉटस्पॉट** में से एक है।
  - अन्य तीन हिमालय, **भारत-बर्मा क्षेत्र और सुंडालैंड** (निकोबार द्वीप समूह शामिल हैं) हैं।
  - इसे यूनेस्को की **विश्व धरोहर स्थल** के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- **महत्त्व:**
  - घाट **भारतीय मानसून** मौसम पैटर्न को प्रभावित करते हैं जो इस क्षेत्र की गर्म उष्णकटिबंधीय जलवायु को प्रभावित करते हैं।
  - वे दक्षिण-पश्चिम से आने वाली बारिश से चलने वाली **मानसूनी हवाओं के लिये बाधा के रूप में** कार्य करते हैं।
  - पश्चिमी घाट **उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के साथ-साथ विश्व स्तर पर खतरे वाली 325 प्रजातियों का घर है।**
  - **पश्चिमी घाट में पठार प्रमुख परिदृश्य हैं**, जो स्थानिक प्रजातियों की प्रबलता के कारण महत्त्वपूर्ण हैं।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2017)

1. भारत में हिमालय पाँच राज्यों में ही फैला हुआ है।
2. पश्चिमी घाट केवल पाँच राज्यों में फैला हुआ है।
3. पुलीकट झील दो राज्यों में ही फैली हुई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 2 और 3
(d) केवल 1 और 3

उत्तर: (b)

प्रश्न. कभी-कभी खबरों में रहने वाली 'गाडगिल कमेटी रिपोर्ट' और 'कस्तूरीरंगन कमेटी रिपोर्ट' किससे संबंधित हैं (2016)

(a) संवैधानिक सुधार
(b) गंगा कार्ययोजना
(c) नदियों को जोड़ना
(d) पश्चिमी घाटों की सुरक्षा

उत्तर: (d)

स्रोत: पी.आई.बी.

अतिचालकता

हाल ही में इटली में L'Aquila विश्वविद्यालय के भौतिकविदों द्वारा **पहली बार पारे (Mercury) की अतिचालकता के संबंध में सूक्ष्मता से जानकारी प्रदान की गई है या यूँ कहें कि एक सूक्ष्म समझ विकसित हुई है।**

- अतिचालकता की विशेषता से पूर्ण पहली सामग्री पारा थी, **लेकिन शोधकर्त्ताओं को यह समझाने में 111 वर्ष लग गए कि आखिर यह ऐसा कैसे करता है।**

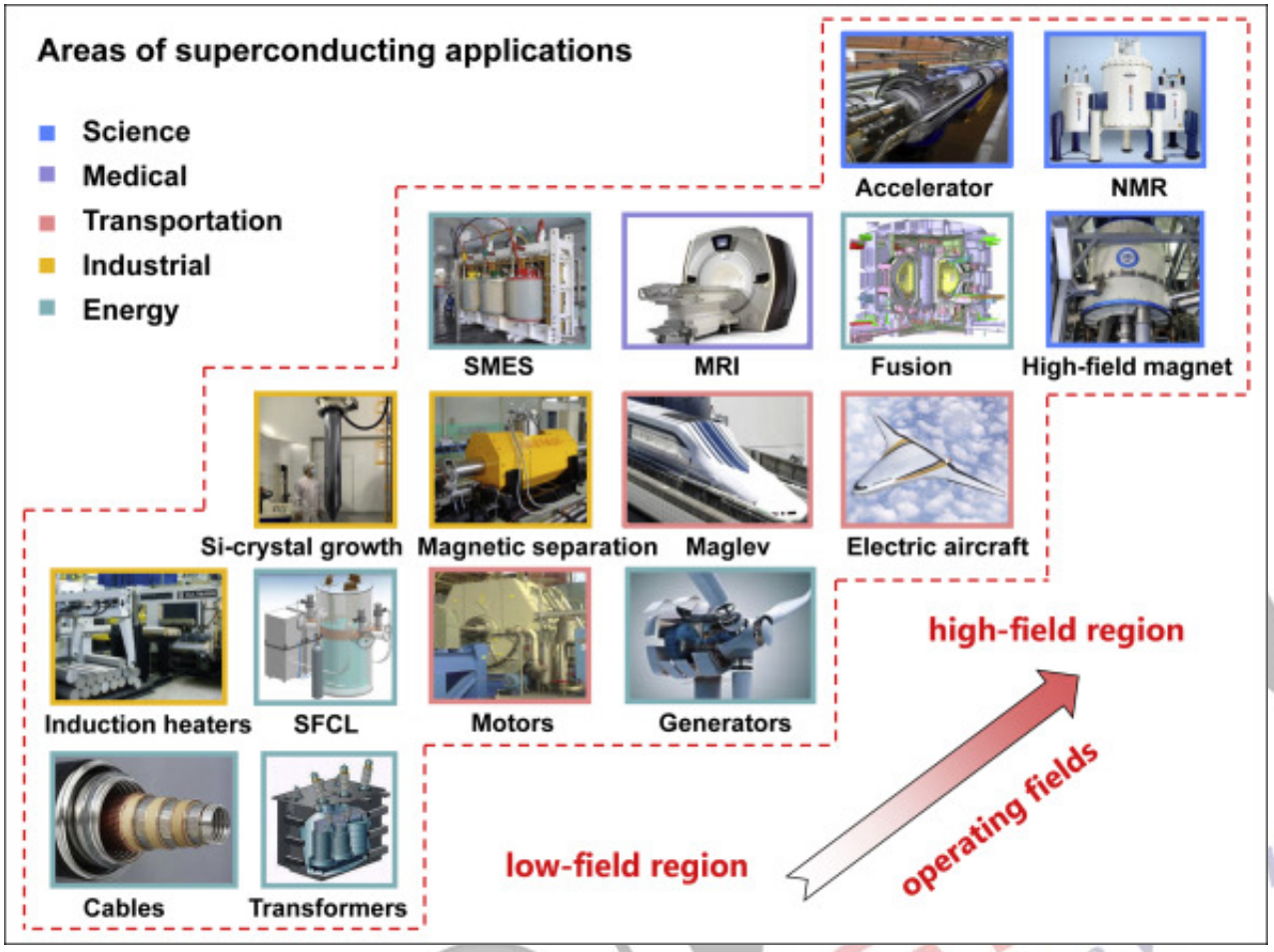

अतचिालकता:

- कसिी प्रतरिोध के बनिा वद्युित धारा को प्रवाहति करने की कसिी पदार्थ की क्षमता को **अतचिालकता** कहा जाता है। यह तब होता है जब कसिी पदार्थ को **क्रांतकि ताप (Critical Temperature)** से नीचे ठंडा कयिा जाता है।

पारे की अतचिालकता:

- **परचिय:**
  - वर्ष 1911 में हाइके कामरलघि ऑन्स ने पारे में अतचिालकता की खोज की।
  - ऑन्स ने पदार्थ को पूर्ण शून्य (सबसे कम संभव तापमान) तक ठंडा करने की वधिकिी खोज की थी।
  - इस वधिकिा उपयोग करते हुए उन्होंने पायाकि बहुत कम तापमान पर जसि **थ्रेशोल्ड तापमान (Threshold Temperature)** कहा जाता है, ठोस पारा वद्युित प्रवाह का कोई प्रतरिोध नहीं करता है। यह भौतकिी के क्षेत्र में ऐतहिासकि खोज है।
- **वभिन्नि पद्धतयिाँ:** पारे की अतचिालकता को वभिन्नि पद्धतयिों द्वारा समझाया गया है:
  - **BCS सद्धिांत:**
    - **बार्डीन-कूपर-श्रफिर (Bardeen-Cooper-Schrieffer- BCS) अतचिालक** में **परमाणुओं के ग्रडि द्वारा उत्पन्न कंपन ऊर्जा** इलेक्ट्रॉनों को जोड़ी बनाने के लयि प्रोत्साहति करती है, जसिसे तथाकथति कूपर जोड़े बनते हैं।
    - ये तांबे के जोड़े एक धारा में जल की भाँतआिगे बढ़ सकते हैं, जो एक थ्रेसहोल्ड तापमान के नीचे अपने प्रवाह के लयि कोई प्रतरिोध नहीं करता है।
      - ये बता सकते हैं कपिारा का इतना कम थ्रेसहोल्ड तापमान (लगभग -270 डग्रिी सेल्सयिस) क्यों है।
  - **स्पनि-ऑर्बटि कपलगि:**
    - स्पनि-ऑर्बटि कपलगि (SOC) वह तरीका है जसिसे एक इलेक्ट्रॉन की ऊर्जा उसके स्पनि और गतकि बीच के संबंध से प्रभावति होती है।
    - SOC ने फोनॉन की ऊर्जा का बेहतर दृश्य प्रदान कयिा और समझाया कि **पारा में इतना कम थ्रेसहोल्ड तापमान (लगभग -270 डग्रिी सेल्सयिस) क्यों है।**
  - **कूलॉम प्रतकिर्षण:**
    - एक अन्य कारक **प्रत्येक जोड़ी में दो इलेक्ट्रॉनों के बीच कूलॉम प्रतकिर्षण** (जैसे **'आवेश प्रतकिर्षण '**) था।
    - अतचिालकता की अवस्था को इलेक्ट्रॉनों के बीच एक आकर्षी अंतःक्रयिा, फोनॉन द्वारा मध्यस्थता तथा प्रतकिर्षी कूलॉम अन्तःक्रयिा (ऋणात्मक आवेशों के बीच वद्युित स्थैतकि प्रतकिर्षण) संतुलन द्वारा नर्धिारति कयिा जाता है।

पारा:

- पारा **प्राकृतकि रूप से पाया जाने वाला तत्त्व है जो वायु, जल और मृदा में पाया जाता है।**
- प्राकृतकि प्रक्रयिाओं जैसे- चट्टानों के अपक्षय, ज्वालामुखी वस्फिोट, भूतापीय गतविधियिों, वनाग्न आदि के माध्यम से वातावरण में उत्सर्जति होता है।
- **मानव गतविधियिों के माध्यम से भी पारा उत्सर्जति होता है।**
- यह एकमात्र ऐसी धातु है जो **कमरे के तापमान पर द्रव अवस्था में रहती है।**

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. पुराने और प्रयुक्त कंप्यूटरों या उनके पुर्जों के असंगत/अव्यवस्थति नपिटान के कारण नम्निलखिति में से कौन-से ई-अपशष्टि के रूप में पर्यावरण में नरि्मुक्त होते हैं?

1. बेरलियिम
2. कैडमयिम
3. क्रोमयिम
4. हेप्टाक्लोर
5. पारा
6. सीसा
7. प्लूटोनयिम

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

(a) केवल 1, 3, 4, 6 और 7
(b) केवल 1, 2, 3, 5 और 6
(c) केवल 2, 4, 5 और 7
(d) 1, 2, 3, 4, 5, 6 और 7

उत्तर: (b)

स्रोत: द हदि

हाइब्रडि इम्युनटिी

द लांसेट इन्फेक्शयिस डज़िीज़ जर्नल में हाल ही में कयि गए एक अध्ययन में कहा गया है कि **"हाइब्रडि इम्युनटिी"** गंभीर कोवडि-19 **के खलिाफ बेहतर सुरक्षा** प्रदान करती है, जबकि कुछ महीनों के भीतर पुन: संक्रमण के खलिाफ सभी प्रकार की प्रतरिक्षा कम हो जाती है।

- यह अध्ययन पछिले SARS-CoV-2 (कोवडि) संक्रमण की सुरक्षात्मक प्रभावशीलता पर 11 अन्य अध्ययनों और हाइब्रडि इम्युनटिी की सुरक्षात्मक प्रभावशीलता पर 15 अध्ययनों के मेटा-वशि्लेषण पर आधारति है।

हाइब्रडि इम्युनटिी:

- संक्रमण से हाइब्रडि इम्युनटिी वैक्सीन द्वारा प्रदान की गई प्रतरिक्षा के साथ-साथ प्राकृतकि सुरक्षा का एक संयोजन है।
- यह केवल संक्रमण या टीकाकरण की तुलना में मज़बूत सुरक्षा परणिाम देती है।
- कोवडि-19 के मामले में हाइब्रडि इम्युनटिी तब होती है जब कोई टीका लगवाने से पहले कोवडि संक्रमण ठीक हो चुका होता है

प्रमुख बदिु

- **बेहतर सुरक्षा:**
  - एक हाइब्रिड इम्युनिटी अकेले संक्रमण की तुलना में सुरक्षा का **"उच्च परिमाण और स्थायित्व"** प्रदान करती है, जो टीकाकरण की आवश्यकता पर ज़ोर देती है।
  - हालाँकि तेज़ी से फैलने वाले ओमीक्रॉन वेरिएंट से अधिक संक्रमण होता है और परिणामस्वरूप अधिक लोग इस हाइब्रिड इम्युनिटी को विकसित कर लेते हैं।
- **हाइब्रिड इम्युनिटी की प्रभावकारिता:**
  - व्यक्ति को हुए संक्रमण के तीन महीने बाद अकेले Sars-CoV-2 संक्रमण के चलते होने वाली**गंभीर बीमारी और अस्पताल में भर्ती होने से बचाव की दर 82.5%** पाई गई।
    - सुरक्षा की यह दर 12 महीनों में 74.6% और 15 महीनों में 71.6% के स्तर पर थी।
  - पुन: संक्रमित होने से सुरक्षा में क्रमशः **तीन महीने में 65.2% और 12 महीनों में 24.7% एवं 15 महीनों में 15.5% की गिरावट** देखी गई है।
  - इसी संबंध में हाइब्रिड इम्युनिटी के प्राथमिक वैक्सीन के आँकड़े बेहतर हैं-**तीन महीने में 96% और 12 महीने में 97.4% तक की सुरक्षा क्षमता।**
    - वहीं तीन महीने में पुन: संक्रमण के खिलाफ 69% सुरक्षा प्रदान कर सकती है, जबकि 12 महीनों में 41.8% तक गिरावट देखी गई है।
  - प्राथमिक और साथ ही बूस्टर खुराक के साथ संक्रमण से प्राप्त हाइब्रिड इम्युनिटी की प्रभावशीलता**तीन महीने में 97.2% और छह महीने में 95.3% थी।**
- **क्रियान्वयन:**
  - इसका उपयोग **SARS-CoV-2 वैक्सीन की संख्या और समय निर्धारण के संबंध में किया जा सकता है।**
  - इसमें कहा गया है कि उच्च SARS-CoV-2 सीरो-प्रचलन वाले क्षेत्रों में प्राथमिक वैक्सीन (मुख्य रूप से उन लोगों जो गंभीर बीमारी के उच्चतम जोखिम जैसे पुरानी या सह-रुग्णता पर केंद्रित है)**गंभीर बीमारी और कम-से-कम एक वर्ष के लिये अस्पताल में भर्ती होने के खिलाफ उच्च सुरक्षा प्रदान कर सकती है।**

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. कोविड-19 वैश्विक महामारी को रोकने के लिये बनाई जा रही वैक्सीनों के प्रसंग में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:(2022)

1. सीरम संस्थान ने mRNA प्लेटफॉर्म का प्रयोग कर कोविशील्ड नामक कोविड-19 वैक्सीन निर्मित की।
2. स्पुतनिक V वैक्सीन रोगवाहक (वेक्टर) आधारित प्लेटफॉर्म का प्रयोग कर बनाई गई है।
3. कोवैक्सीन एक निष्क्रिय रोगजनक आधारित वैक्सीन है।

उपर्युक्त कथनों में कौन से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: B

व्याख्या:

- COVISHIELD वैक्सीन उस प्लेटफॉर्म पर आधारित है जो SARS-CoV-2 स्पाइक (S) ग्लाइकोप्रोटीन को एन्कोडिंग करने वाले एक पुनःसंयोजक, प्रतिकृति-रहित चिंपैंजी एडेनोवायरस वेक्टर का उपयोग करता है। इसे लगाए जाने के बाद कोरोनावायरस के हिस्से की आनुवंशिक सामग्री प्रकट होती है जो एक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करती है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- स्पुतनिक V एक अच्छी तरह से अध्ययन किये गए मानव एडेनोवायरस वेक्टर प्लेटफॉर्म पर आधारित विश्व की पहली पंजीकृत वैक्सीन है। इसे 4 अरब लोगों की कुल आबादी वाले 71 देशों में उपयोग के लिये मंज़ूरी दी गई है। वैक्सीन का नाम पहले सोवियत अंतरिक्ष उपग्रह के नाम पर रखा गया है। 5 दिसंबर, 2020 और 31 मार्च, 2021 के बीच दोनों वैक्सीन घटकों के साथ वैक्सीन लगाए गए रूसियों के बीच कोरोनावायरस की घटनाओं के आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर वैक्सीन की प्रभावकारिता 97.6% है। **अतः कथन 2 सही है।**
- Covaxin एक निष्क्रिय वायरल वैक्सीन है। इस वैक्सीन को होल-विरियन इनएक्टिवेटेड वेरो सेल-व्युत्पन्न तकनीक से विकसित किया गया है। उनमें निष्क्रिय वायरस होते हैं, जो किसी व्यक्ति को संक्रमित नहीं कर सकते हैं, लेकिन फिर भी प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय वायरस के खिलाफ एक रक्षा तंत्र तैयार करने में सक्षम बनाया जा सकता है। **अतः कथन 3 सही है।**

अत: विकल्प B सही है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 20 जनवरी, 2023

सबमरीन वागीर

भारतीय नौसेना **कलवरी श्रेणी की पाँचवीं सबमरीन** "वागीर" को अपने बेड़े में शामलि करेगी। भारत में इस सबमरीन का नरि्माण मुंबई के मझगाँव डॉक शपिबलि्डर्स लमिटिेड ने **फ्राँस की कंपनी नेवल ग्रुप** के सहयोग से कयिा है। वागीर स्वदेश में नरि्मति अब तक की सभी सबमरीन में **सबसे कम समय में** तैयार हुई है। इससे भारतीय नौसेना की क्षमता में वृद्धि होगी। **प्रोजेक्ट- 75** के तहत स्कॉर्पीन डज़िाइन की **छह सबमरीन का स्वदेशी नरि्माण** कयिा जाना शामलि है। कलवरी-श्रेणी की सबमरीन में **युद्ध-रोधी और सबमरीन-रोधी संचालन**, **खुफयिा जानकारी एकत्र करने और नगिरानी** तथा माइन बछिाने सहति वभिन्नि प्रकार के **नौसैनकि युद्ध संचालन की क्षमता है।** भारतीय नौसेना में **पहली सबमरीन INS कलवरी** को दसिंबर 2017, **दूसरी सबमरीन INS खंडेरी** को सतिंबर 2019 में, **तीसरी सबमरीन INS करंज** को मार्च 2021 में और **चौथी सबमरीन INS वेला** को नवंबर 2021 में सेवा में शामलि कयिा गया था। **छठी और आखरिी सबमरीन वाग्शीर को वर्ष 2023 के अंत तक नौसेना को सौंपे जाने की उम्मीद है।**

बत्तख की दुर्लभ प्रजाति

बत्तख की एक दुर्लभ प्रजाति **ग्रेटर स्कूप**, जसिे स्थानीय रूप से **सदांगमन** के नाम से जाना जाता है, को हाल ही में 94 वर्षों के अंतराल के बाद **मणपिुर के बष्णिुपुर ज़लि में लोकटक झील** में देखा गया है। **ग्रेटर स्कूप** एक **मध्यम आकार की गोता लगाने वाली बत्तख की प्रजाति** है जो **एनाटडि वर्ग** से संबंधति है। बत्तख की इस प्रजाति को **मणपिुर के पक्षी वज्ञिानी कुमम जुगेश्वर और वन्यजीव खोजकर्त्ताओं** द्वारा देखा गया। पक्षी वैज्ञानकिों का कहना है कि **94 वर्षों बाद लोकटक झील में बत्तख देखे जाने का यह पहला रकिॉर्ड है, जबकि ब्रटिशि काल के दौरान मणपिुर में ग्रेटर स्कूप के व्यापक रूप से बसेरा करने का कोई रकिॉर्ड नहीं है।** ऐसा माना जाता है कि गोरखा राइफल्स के कैप्टन एल गैंबल और भारतीय सविलि सेवा अधकिारी जेपी मल्सि ने क्रमश: जनवरी 1925 एवं दसिंबर 1927 में इन बत्तखों का शकिार कयिा था। वर्तमान में लोकटक झील में व्हसिलगि बत्तख और कूट भी देखे जा सकते हैं।

सैन्य रणक्षेत्रम् 2.0

भारतीय सेना के सेना प्रशक्षिण कमान मुख्यालय (HQ Training Command) द्वारा अक्तूबर 2022 से जनवरी 2023 तक "सैन्य रणक्षेत्रम् 2.0" नाम से हैकथॉन (Hackathon) के दूसरे संस्करण का आयोजन कयिा गया। सैन्य रणक्षेत्रम् 2.0 का लक्ष्य परचिालन संबंधति साइबर चुनौतयिों का समाधान तलाशना, साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में अभनिव समाधानों को तत्काल शुरू करना और इसके वकिास में लगने वाले समय को कम करना है। साथ ही इसका लक्ष्य साइबर प्रतरिोध, सुरक्षा सॉफ्टवेयर कोडगि, इलेक्ट्रो मैग्नेटकि स्पेक्ट्रम परचिालन एवं आर्टफिशियिल इंटेलजिेंस/मशीन लर्नगि के क्षेत्र में प्रशक्षिण मानक को बढ़ावा देना भी था। इसमें सभी भारतीय नागरकि व्यक्तगित या टीम के रूप में हस्सिा ले सकते थे। 17 जनवरी, 2023 को एक वर्चुअल समारोह में सैन्य प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने इस आयोजन के पुरस्कार वजिताओं को सम्मानति कयिा।

राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (NDRF)

केंद्रीय गृह मंत्री ने हाल ही में **राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (National Disaster Response Force- NDRF)** को उसके 18वें स्थापना दविस (19 जनवरी) पर बधाई दी। **NDRF दुनिया की सबसे बड़ी त्वरति मोचन बल है** जो आपदा मोचन के लयि समर्पति है। NDRF का गठन वर्ष 2006 में आपदा प्रबंधन अधनियिम, 2005 के तहत प्राकृतकि और मानव नरि्मति आपदाओं हेतु वशिेष मोचन के उद्देश्य से कयिा गया था। **वर्ष 2008 में कोसी बाढ़ NDRF का पहला मशिन था।**

और पढ़ें... आपदा प्रबंधन अधनियिम, 2005

सर्वोच्च न्यायालय का Google-CCI मुद्दे से संबंधति याचकिा पर वचिार करने से इनकार

सर्वोच्च न्यायालय ने **Google पर 1,337 करोड़ रुपए के जुर्माने पर अंतरमि रोक लगाने से इनकार करने वाले NCLAT के आदेश के खलिाफ Google की याचकिा पर वचिार करने से इनकार** कर दयिा है। सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय प्रतस्पिर्द्धा आयोग (CCI) द्वारा लगाए गए **जुर्माने का 10% जमा करने के लयि Google को 7 दनि का समय दयिा है। भारतीय कंपनयिों ने Google के खलिाफ न्यायालय के इस कदम का स्वागत कयिा है।** इससे पहले CCI ने एंड्रॉइड मोबाइल डवािइस इकोसस्टिम से संबंधति **बाज़ारों में 'अपनी प्रमुख स्थति का दुरुपयोग करने'** के लयि Google पर जुर्माना लगाया था। इस संबंध में Google ने CCI के आदेश के खलिाफ NCLAT में अपील दायर की थी जसिे NCLAT ने अस्वीकार कर दयिा था।

और पढ़ें... भारतीय प्रतस्पिर्द्धा आयोग (CCI) द्वारा गूगल पर जुर्माना, राष्ट्रीय कंपनी कानून अपीलीय न्यायाधकिरण

सांसद खेल महाकुंभ 2022-23

हाल ही में **भारत के प्रधानमंत्री ने बस्ती (UP)** में आयोजति **सांसद खेल महाकुंभ 2022-23** (18-28 जनवरी) के दूसरे चरण का उद्घाटन कयिा। पहले

चरण का आयोजन 10-16 दसिंबर, 2022 तक कयिा गया था। खेल महाकुंभ एक अनूठी पहल है जो खेल प्रतभिाओं को प्रदर्शति करने का अवसर एवं मंच प्रदान करता है तथा लोगों को खेल को कॅरयिर वकिल्प के रूप में अपनाने के लयि प्रेरति करता है। खेल महाकुंभ द्वार**वभिन्नि प्रकार की प्रतयिोगतिाओं (इनडोर और आउटडोर)** का आयोजन कयिा जाता है जैसे- कुश्ती, कबड्डी, खो-खो, बास्केटबॉल, फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबॉल आदि के साथ-साथ नबिंध लेखन, पेंटगि एवं रंगोली बनाने की प्रतयिोगतिा भी आयोजति की जाती है। इन खेलों के माध्यम से प्रदर्शन करने वाले एथलीटों को **भारतीय खेल प्राधकिरण** के अंतर्गत आगे के प्रशक्षिण हेतु चुना जा रहा है।

और पढ़ें..... महत्त्वाकांक्षी भारत में खेल की भूमकिा, भारत में खेल शासन

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/prelims-facts/20-01-2023/print